International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 826-829

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 826-829
www.allresearchjournal.com
Received: 01-06-2017
Accepted: 05-07-2017

बद्री नारायण माधव
शोध छात्र, आई. सी. पी. आर. नई दिल्ली, स्नातकोत्तर, दर्शनशास्त्र विभाग, टी. एम. बी. वि. वि. भागलपुर बिहार, भारत

Correspondence
बद्री नारायण माधव
शोध छात्र, आई. सी. पी. आर. नई दिल्ली, स्नातकोत्तर, दर्शनशास्त्र विभाग, टी. एम. बी. वि. वि. भागलपुर बिहार, भारत

जैन धर्म का उद्भव एवं विकासः प्रतिमाओं की लाक्षणिक कलाएँ

बद्री नारायण माधव

सारांश
जैन धर्म के प्राचीन इतिहास को देखने पर पता चलता है कि भारतवर्ष में जैन धर्म व संस्कृति का उद्भव चौबीसवें तीर्थंकर महावीर (छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व) के पूर्व ही हो चुका था। पाली साहित्य के कतिपय उल्लेखों में भी महावीर के पूर्व के जैन इतिहास व संस्कृति पर कुछ प्रकाश पड़ता है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि मगध जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। मगध के शिशुनागवंशी सम्राट श्रेणिक और उनकी साम्राज्ञी चेलना तथा वज्जी गणतंत्र के प्रमुख राजा चेटक जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी थे। कोसल में महावीर ने अनेक बार भ्रमण किया उत्तर भारत के अयोध्या, श्रावस्ती, और साकेत जैन धर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र रहे हैं। कलचुरियों के शासनकाल में जैन धर्म को दुर्दिनो का सामना करना पड़ा तथापि शिलालेखों से जानकारी मिलती है कि शैवों द्वारा किये गये उत्पीड़न के होते हुए भी जैन धर्म किसी प्रकार अपने को जीवित रख सका। वर्तमान में भारत के अन्य भागों की अपेक्षा पश्चिम भारत, दक्षिणापथ और कर्नाटक में जैन धर्मानुयायियों की संख्या सर्वाधिक है। जैन मंदिरो के अवशेष तथा बड़ी संख्या में तीर्थंकर प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। जैन मंदिरों में तीर्थंकर प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापन वरिष्ठता क्रम में होता है। एक से अधिक प्रतिमाओं के स्थापन होने पर मुख्य प्रतिमा मूल नायक कहलाती है जो कि अन्य तीर्थंकर प्रतिमाओं के मध्य में स्थित होती है। ऋषभनाथ, सुपार्श्वनाथ और महावीर प्रमुख मूल नायक माने जाते हैं।

कूटशब्दः छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व, मगध, दुर्दिना, तीर्थंकर प्रतिमाएँ, धर्मानुयायियों, मूल नायक

प्रस्तावना
जैन धर्म भारत के प्राचीनतम धर्मों में से एक है। प्राचीन कलाएँ धर्म का अनुशरण करती थीं। यही कारण है कि प्राचीन धर्मों के स्वरुप को समझने में मूर्तिकला की भूमिका सबसे अहम् होती है। धर्म के भावनात्मक, भक्तिपरक एवं लोकप्रिय रुपों के पल्लवन के लिए भी कला और स्थापत्य के विविध कृतियों के निर्माण की आवश्यकता महसूस हुई। जैन धर्म की आत्मा उसकी कला में स्पष्ट रुप से प्रतिबिम्बित है। जैनों के समृद्ध प्राचीन साहित्य, कला और संस्कृति से इसकी लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है। लोहानीपुर एवं हड़प्पा से प्राप्त कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रदर्शित सिरविहीन दिगम्बर प्रतिमा को विद्वान जैन तीर्थंकर की प्रतिमा के रूप में स्वीकारते है। इसी प्रकार हड़प्पा से प्राप्त मुहर पर अंकित ध्यानस्थ योगी की प्रतिमा जिनपर ऋषभ का चित्र बना है को प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की मूर्ति का आदि रूप माना जा सकता है। इससे ज्ञात होता है कि ईसा पूर्व तीसरी सहस्त्राब्दी में आदिनाथ और उनका लांछन ऋषभ लोकप्रिय हो चुका था। मूर्तिपूजा हड़प्पा सभ्यता की देन है जिसे संभवतः सर्वप्रथम जैन धर्म ने अपनाया फिर इसका प्रचार और प्रसार वैदिक धर्म में हुआ। जैन धर्म उत्तर भारत की देन है वहीं से यह प्रसारित होता हुआ देश विदेश पहुँचा। मगध साम्राज्य लगभग प्रत्येक धर्म व संप्रदाय का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है राजगृह और नालंदा में जैन धर्म का अत्यधिक प्रभाव था इसलिए बुद्ध को यहां जैनियों से बहुत लोहा लेना पड़ा।
जैन धर्म के पहले तीर्थंकर ऋषभनाथ/आदिनाथ का उल्लेख विष्णु और भागवत पुराण में मिलता है। ये प्राचीन ब्राह्मण साहित्य एक ऐसे सम्प्रदाय का संदर्भ प्रस्तुत करते हैं जो वेदों और पशुबली का विरोध करता था। यजुर्वेद में ऋषभनाथ, अजितनाथ और अरिष्टनेमि का नामोल्लेख मिलता है। जैन धर्म में नेमिनाथ को बाइसवां तीर्थंकर माना गया है और उन्हें भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन बताया जाता है। इस धर्म की वास्तविक प्रतिष्ठा तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय हुई जिनका काल 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। बौद्ध धर्म के समान, जैन धर्म भी वेदों और वर्णधर्म की वैधता स्वीकार नहीं करता और सभी सम्प्रदायों के प्रति समभाव रखता है। यह नैतिक धर्म का पालन करने की शिक्षा देता है और जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होने के लिए कठोर तपस्या व संयम की वकालत करता है। परवर्ती काल में जैन धर्म के दो सम्प्रदाय हो गये– श्वेताम्बर और दिगम्बर। जैन धर्म भगवान महावीर की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। कुछ लोग जैन धर्म को वेदों के जितना प्राचीन मानते हैं।

जैन धर्म में कुल चौबीस तीर्थंकर माने गये हैं जिनकी सूची इस प्रकार है –

1. ऋषभनाथ	2. अजितनाथ	3. सम्भवनाथ
4. अभिनन्दननाथ	5. सुमतिनाथ	6. पद्मप्रभ
7. सुपार्श्वनाथ	8. चन्द्रप्रभ	9. पुष्पदन्त
10. शीतलनाथ	11. श्रेयांशनाथ	12. वासुपूज्य

13. विमलनाथ	14. अनंतनाथ	15. धर्मनाथ
16. शांतिनाथ	17. कुंथुनाथ	18. अरनाथ
19. मल्लिनाथ	20. मुनिसुब्रत	21. नमिनाथ
22. नेमिनाथ	23. पार्श्वनाथ	24. महावीर।

जैन मंदिरों में तीर्थंकर प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापन वरिष्ठता क्रम में होता है। एक से अधिक प्रतिमाओं के स्थापन होने पर मुख्य प्रतिमा मूल नायक कहलाती है जो कि अन्य तीर्थंकर प्रतिमाओं के मध्य में स्थित होती है। ऋषभनाथ, सुपार्श्वनाथ और महावीर प्रमुख मूल नायक माने जाते हैं। तीर्थंकरो की प्रतिमाएँ सामान्यतः दो प्रकार से पायी जाती हैं। प्रथम एक, तीन अथवा चौबीस तीर्थंकरों के समूह के रुप में, द्वितीय वृत्ताकार रुप में। तीन तीर्थंकरों का समूह त्रितीर्थंक कहलाता है जबकि चौबीस तीर्थंकरों का समूह चतुर्विंशति कहलाता है। प्रतिमा निरुपण में जैन तीर्थंकरों को एक यति के रुप में वस्त्र धरण किये हुए अथवा नग्न प्रदर्शित किया जाता है। मुख्यतः उन्हें दो यौगिक मुद्राओं समाधि और कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। सामान्य तौर पर जैन तीर्थंकरों और बुद्ध की प्रतिमाएँ समानता प्रदर्शित करती हैं किंतु उनके मध्य कई महत्वपूर्ण अंतर होते हैं। तीर्थंकर प्रतिमाओं के वक्ष स्थल पर श्रीवत्स लांछन अनिवार्य रुप से पाया जाता है और सिर के उपर त्रिछत्र के अंकन के साथ ही पादपीठिका पर लांछन भी मिलता है। कुषाण काल तक तीर्थंकरों के लांछनों का संभवतः विकास नहीं हुआ था न ही उनके साथ यक्ष और यक्षिणी प्रतिमाओं का प्रदर्शन किया जाता था। किंतु अंबिका यक्षी की प्रतिमा अपवाद है। तीर्थंकर प्रतिमाओं के साथ यक्ष–यक्षिणी प्रतिमाओं का प्रदर्शन गुप्तकाल में प्रारंभ हुआ किंतु परिचरों का प्रदर्शन और तीर्थंकरों के साथ संबद्धता गुप्तकाल तक निर्धारित नहीं हो पाई थी। गंधर्वों और चंवरधारियों का प्रदर्शन इस काल में सामान्य रुप से होने लगा था।

तीर्थंकर प्रतिमाओं की लाक्षणिक कलाएँ

1. ऋषभनाथ/आदिनाथ

इनका लांछन वृषभ या धर्मचक्र है। इनके पिता का नाम नाभिराज कुलकर और माता का नाम मरुदेवी था। इनका जन्म अयोध्या में और निर्वाण कैलाश पर्वत पर हुआ था। जैन मत के अनुसार आदिनाथ की 101 संतानें बताई जाती हैं जिनमें भरत चक्रवर्ती और बाहुबली मुख्य हैं। इनकी दो पुत्रियाँ ब्राह्मी और सुंदरी थीं। इन्हें न्यग्रोध (बोधिवृक्ष) के नीचे केवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनकी प्रतिमा के दाहिने पार्श्व में गोमुख यक्ष और बांये पार्श्व में चक्रेश्वरी यक्षिणी को प्रदर्शित किया जाता है। उनके साथ कभी–कभी उनके दोनो पुत्रों भरत और बाहुबली को उपासक के रुप में भी प्रदर्शित किया जाता है।

2. अजितनाथ

इनका जन्म विनीता नगरी के राजा जितशत्रु की महारानी विजया देवी के गर्भ से माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि को हुआ था। इनका लांछन गज है। इन्हें केवल्य वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। महायक्ष और अजितबाला इनके सहायक यक्ष–यक्षिणी हैं और कभी–कभी सागरचक्री चंवरधारिणी का भी प्रदर्शन किया जाता है।

3. संभवनाथ

इनका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी को मृगशीर नक्षत्र में श्रावस्ती नगरी में हुआ था। इनके पिता का नाम राजा जितारी तथा माता का नाम सेनारानी था। इनका अभिज्ञानिक लांछन अश्व है। इन्हें सालवृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। प्रतिमाओं में इनके साथ त्रिमुख यक्ष और दूरितारी यक्षिणी के साथ सत्यवीर्य नामक चंवरधारी को भी प्रदर्शित करने का विधान है। दूरितारी को प्रज्ञप्ति भी कहा जाता है।

4. अभिनंदननाथ

इनका जन्म इक्ष्वाकुवंश में माघ शुक्ल द्वितीया को पुनर्वसु नक्षत्र में अयोध्या में हुआ था। इनके माता सिद्धार्थ देवी तथा पिता राजा संवर थे। इनका लांछन कपि है और इन्हें प्रियांगु नामक वृक्ष के नीचे केवल्य की प्राप्ति हुई थी। इनकी प्रतिमाओं में ईश्वर और काली अथवा वज्रश्रृखंला नामक यक्ष–यक्षिणी का प्रदर्शन किया जाता है। इनकी प्रतिमाएँ सदैव कायोत्सर्ग मुद्रा में ही मिलती हैं।

5. सुमतिनाथ

पांचवें तीर्थंकर का जन्म इक्ष्वाकु वंश के ही राजा मेघप्रिय की पत्नी रानी सुमंगला के गर्भ से मघा नक्षत्र में वैशाख शुक्ल अष्टमी को अयोध्या में हुआ था। इनका लांछन क्रौंच अथवा चक्रवाक पक्षी है। इन्हें भी प्रियांगु वृक्ष के नीचे सिद्धी प्राप्त हुई थी। प्रतिमाओं में इनके साथ तुम्बरु यक्ष और महाकाली अथवा पुरुषदत्ता यक्षिणी का प्रदर्शन किया जाता है। कभी–कभी इनके साथ मित्रवीर्य नामक चंवरधारी को भी प्रदर्शित किया जाता है।

6. पद्मप्रभ

इनका जन्म कौशाम्बी के इक्ष्वाकु वंश में कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष द्वादशी को चित्रा नक्षत्र में हुआ था। इनकी माता सुसीमा देवी तथा पिता श्री धरणराज थे। इनके पहचान का चिन्ह पद्म पुष्प है और इन्हें सिरीश या प्रियांगु वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनका यक्ष कुसुम और यक्षिणी श्यामा है तथा चंवरधारी के रुप में यमद्यूति को प्रदर्शित किया जाता है।

7. सुपार्श्वनाथ

सातवें तीर्थंकर का जन्म वाराणसी के इक्ष्वाकु वंश में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को विशाखा नक्षत्र में हुआ। इनकी माता रानी पृथ्वीदेवी तथा पिता राजा प्रतिष्ठ थे। इनका लांछन स्वस्तिक है और इनके सिर के पीछे पाँच नागफणों से युक्त नागछत्र अंकित करने का विधान है। इन्होनें सुशीर नामक वृक्ष के नीचे केवल्य की प्राप्ति की थी। श्वेताम्बर परंपरा के अनुसार मातंग और शांति इनके यक्ष और यक्षिणी हैं जबकि दिगम्बर परंपरा के अनुसार वरनंदी और कटी इनके यक्ष–यक्षिणी हैं। इनका चंवरधारी धर्मवीर्य है।

8. चन्द्रप्रभ

इनका जन्म चन्द्रपुरी में पौष माह की कृष्ण पक्ष द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र में हुआ था। इनकी माता लक्ष्मणदेवी तथा पिता राजा महासेन थे। इनका अभिज्ञानिक लक्षण चन्द्र है और इन्होनें नागब्रह्म नामक वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान की प्राप्ति की थी। विजय और भृकुटी इनके यक्ष और यक्षिणी हैं। चंवरधारी के रुप में दानवीर्य का उल्लेख मिलता है।

9. पुष्पदंत

नौवें तीर्थंकर पुष्पदंत का जन्म काशी में इक्ष्वाकु वंश के राजा सुग्रीव की पत्नी माता रामादेवी के गर्भ से मार्गशीर्ष माष के कृष्ण पक्ष के पंचमी तिथि को मूल नक्षत्र में हुआ था। इन्हे सुविधिनाथ के नाम से भी जाना जाता है। इनका लांछन मकर अथवा केकड़ा है। इन्हें नाग या मल्ली वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनका यक्ष अजित है। श्वेताम्बर परंपरा में इनकी यक्षिणी सुतारी है जबकि दिगम्बर परंपरा में महाकाली है। इनके चंवरधारी के रूप में मघवटराय को प्रदर्शित किया जाता है।

10. शीतलनाथ

इनका जन्म भद्रिकापुरी में इक्ष्वाकु वंश के राजा दृढ़रथ की पत्नी सुनंदा के गर्भ से माघ मास कृष्ण पक्ष द्वादशी तिथि को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में हुआ था। इनका लांछन पीपल वृक्ष है। इन्हें विल्व वृक्ष के नीचे केवल्य की प्राप्ति हुई थी। इनके यक्ष और यक्षिणी का नाम क्रमशः ब्रह्मा और अशोका (श्वेताम्बर) है। दिगम्बर परंपरा में इनकी यक्षिणी को मानवी कहा जाता है।

11. श्रेयांशनाथ

इनका जन्म सिंहपुरी में इक्ष्वाकु वंश के राजा विष्णुराज की पत्नी विष्णुदेवी के गर्भ से फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष द्वितीया को श्रवण नक्षत्र में हुआ था। इनका लांछन हिरण है तथा इन्होनें तुम्बरू वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। श्वेताम्बर परंपरा के अनुसार इनके यक्ष का नाम यक्षेय तथा यक्षिणी मानवी है जबकि दिगम्बर परंपरा में इनके यक्ष यक्षेश्वर व यक्षिणी गौरी है। राजा त्रिपिष्ट वासुदेव इनके चंवरधारी हैं।

12. वासुपूज्य
वासुपूज्य का जन्म चम्पापुरी के इक्ष्वाकु वंश में फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को सतभिशाखा नक्षत्र में हुआ था। इनके माता का नाम जया देवी तथा पिता का नाम वासुपूज्य था। इन्होनें फाल्गुन अमावस्या तिथि को चम्पापुरी में ही दीक्षा प्राप्त की। इनका अभिज्ञानिक लक्षण महिष है और इन्हें कदम्ब वृक्ष के नीचे कैवल्य की प्राप्ति हुई थी।

13. विमलनाथ
विमलनाथ का जन्म कम्पिलांजी में राजा कृतवर्मा की पत्नी श्यामा देवी के गर्भ से माघ शुक्ल तृतीया को उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में हुआ था। इनका लांछन रीछ (भालू) है। इन्होनें जम्बूवृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। इनका यक्ष षणमुख तथा यक्षिणी विदिता हैं। इनके चंवरधारी का नाम स्वप्नवासुदेव है।

14. अनंतनाथ
चौदहवें तीर्थंकर अनंतनाथ का जन्म अयोध्या के राजा सिंहसेन की पत्नी सुयशा देवी के गर्भ से वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को रेवती नक्षत्र में हुआ था। इनका अभिज्ञानिक लांछन श्वेताम्बर परंपरा में चील और दिगम्बर परंपरा में भालू है। इन्होनें अश्वत्थ वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। इनका यक्ष पाताल और यक्षी अनंतमति हैं। चंवरधारी के रुप में पुरुषोत्तम वासुदेव को भी दिखाया जाता है।

15. धर्मनाथ
इनका जन्म रत्नपुरी के राजा भानुपुरी की धर्मपत्नी सुब्रता देवी के गर्भ से माघ शुक्ल पक्ष तृतीया को पुष्य नक्षत्र में हुआ था। इनके शरीर का वर्ण सुवर्ण है तथा अभिज्ञानिक लक्षण वज्रदण्ड है। इन्हें दधिपर्ण वृक्ष के नीचे केवल्य प्राप्त हुआ था। इनका यक्ष किन्नर और यक्षिणी कन्दर्पा (श्वेताम्बर) है जबकि दिगम्बर परंपरा के अनुसार इनकी यक्षी मानवीय को माना गया है। पुण्डरिक वासुदेव इनके चंवरधारी हैं।

16. शांतिनाथ
इनका जन्म हस्तिनापुर के इक्ष्वाकु वंश के राजा विश्वसेन की धर्मपत्नी अचिरादेवी के गर्भ से ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को भरणी नक्षत्र में हुआ था। इन्हें नंदी वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनका लांछन हिरण अथवा कछुआ है। दिगम्बर सम्प्रदाय के अंतर्गत इनका यक्ष गरुड़ और यक्षी महामानसी है जबकि श्वेताम्बर परंपरा के अंतर्गत यक्षी निर्वाणी को प्रदर्शित किया जाता है। राजा पुरुषदत्ता इनके चंवरधारी के रुप में दिखाये जाते है।

17. कुंथुनाथ
इनका जन्म हस्तिनापुर में कुरुवंश के राजा सूर्य की धर्मपत्नी श्रीदेवी के गर्भ से वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को कृत्तिका नक्षत्र में हुआ था। इनका लांछन अज है। तिलकतरु नामक वृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनके साथ गन्धर्व यक्ष और विजया यक्षी प्रदर्शित किये जाते हैं। इनके चंवरधारी का नाम कुण्डल है।

18. अरनाथ
हस्तिनापुर के इक्ष्वाकु वंश में मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष दशमी को रेवती नक्षत्र में इनका जन्म हुआ था। इनके माता का नाम मित्रा देवी और पिता का नाम राजा सुदर्शन था। नद्यावर्त अथवा मत्स्य इनका लांछन है। इन्होनें आम्र वृक्ष के नीचे तपश्चर्या की थी। महेन्द्र यक्ष और विजयादेवी यक्षी इनके दांयी और बांयी ओर प्रदर्शित किये जाते हैं। इनके चंवरधारी के रुप में गोविन्द राजा को प्रदर्शित करने का विधान है।

19. मल्लिनाथ
इनका जन्म मिथिला के इक्ष्वाकु वंश में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी को आश्विन नक्षत्र में हुआ था। इनके पिता राजा कुम्भराज तथा माता रक्षिता देवी थीं। इनके पादपीठिका पर कलश लांछन अंकित किया जाता है। इन्होनें अशोक वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। इनके साथ शासन देवी–देवता के रुप में कुबेर यक्ष और धारिणीप्रिया यक्षी को प्रदर्शित किये जाने का विधान है। दिगम्बर परंपरा में इनके यक्षी के रुप में अपराजिता का उल्लेख मिलता है। इनके साथ चंवरधारी के रुप में राजा सुलम को प्रदर्शित किया जाता है।

20. मुनिसुव्रत
इनका जन्म राजगृह के हरिवंश कुल में ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष अष्टमी तिथि को श्रवण नक्षत्र में राजा सुमित्रा की धर्मपत्नी पद्मावती के गर्भ से हुआ था। इन्हें चंपक वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनका अभिज्ञानिक लक्षण कछुआ है। वरुण यक्ष को उनके दांयी ओर प्रदर्शित किया जाता है। श्वेताम्बर परंपरा में उनकी यक्षी नरदत्ता और दिगम्बर परंपरा में बहुरुपिणी है जिसे बांयी ओर प्रदर्शित किया जाता है। इनके चंवरधारी का नाम अजिता है।

21. नमिनाथ
इनका जन्म मिथिला के इक्ष्वाकु वंश में श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अश्विनी नक्षत्र में हुआ था। इनकी माता का नाम वीप्रारानी तथा पिता का नाम राजा विजय था। इनके पादपीठिका पर लांछन के रुप में नीलपद्म अथवा अशोक वृक्ष का अंकन किया जाता है। इन्होनें अकुल वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान की प्राप्ति की थी। इनके यक्ष भृकुटी और यक्षी गांधारी (श्वेताम्बर) अथवा चामुण्डी (दिगम्बर) का उल्लेख मिलता है। इनके चंवरधारी के रुप में विजयराजा को प्रदर्शित किया जाता है।

22. नेमिनाथ
नेमिनाथ का जन्म सौरीपुर द्वारका के हरिवंश कुल में राजा समुद्रविजय की पत्नी शिवा देवी के गर्भ से श्रवण माह के शुक्ल पक्ष के पंचमी तिथि को चित्रा नक्षत्र में हुआ था। इनका अभिज्ञानिक लक्षण शंख है। इन्हें केवल्य ज्ञान की प्राप्ति महावेणु वटवृक्ष के नीचे हुआ था। श्वेताम्बर परंपरा में इनका यक्ष गोमेद और दिगम्बर परंपरा में सर्वहन माने जाते हैं। इसी प्रकार यक्षी के रुप में सिंहवाहिनी अम्बिका (श्वेताम्बर) अथवा कुष्माण्डी/आम्रा (दिगम्बर) को प्रदर्शित किया जाता है। चंवरधारी के रुप में उग्रसेन को प्रदर्शित किया जाता है।

23. पार्श्वनाथ
इनका जन्म बनारस के इक्ष्वाकु वंश में राजा अश्वसेन की धर्मपत्नी वामदेवी के गर्भ से पौष माह में कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि को विशाखा नक्षत्र में हुआ था। इनका अभिज्ञानिक लक्षण सर्प है। इन्होनें धतकी वृक्ष के नीचे केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। इनके साथ धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी को प्रदर्शित किया जाता है तथा अजितराज इनके चंवरधारी है।

24 महावीर
जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर महावीर का जन्म कुण्डलपुर वैशाली के इक्ष्वाकु वंश में राजा सिद्धार्थ की पत्नी माता त्रिशला देवी के गर्भ से चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। इनका वर्ण सुवर्ण है तथा साल वृक्ष के नीचे इन्होनें तपस्या की थी। इनके पादपीठ पर सिंह का अंकन मिलता है। मातंग यक्ष और सिद्धायिका इनके शासन देवी–देवता हैं। साथ ही श्रेणिक चंवरधारी को भी प्रदर्शित किया जाता है।
भारत में जैन मंदिरो के अवशेष तथा बड़ी संख्या में तीर्थंकर प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। वत्सराज के शासनकाल के एक शिलालेख में जैन मंदिर के निर्माण का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार नौवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक जैन धर्म का व्यापक प्रभाव प्रतिहार, चंदेल, परमार, राष्ट्रकूट, चालुक्य राजवंश के शासकों द्वारा मालवा, गुजरात, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश के भागों में देखने का मिलता है। कलचुरियों के शासनकाल में जैन धर्म को दुर्दिनो का सामना करना पड़ा तथापि शिलालेखा से जानकारी मिलती है कि शैवों द्वारा किये गये उत्पीड़न के होते हुए भी जैन धर्म किसी प्रकार अपने को जीवित रख सका। वर्तमान में भारत के अन्य भागों की अपेक्षा पश्चिम भारत, दक्षिणापथ और कर्नाटक में जैन धर्मानुयायियों की संख्या सर्वाधिक है।

उपसंहार

जैन धर्म के समस्त निन्हवों में दिगम्बर–श्वेताम्बर मतभेद ही गंभीरतम था यही कारण है कि जैन धर्म स्थायी रुप से दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विषय में विस्तृत जानकारी देना यहाँ उचित प्रतीत नहीं होता तथपि इतना कहना पर्याप्त होगा कि दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष ने जैन मुनिसंघ के एक भाग को भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण की ओर विहार कर जाने के लिए विवश किया और जो मुनि मगध में रह गये थे उन्हे खण्ड वस्त्र धारण करने की छूट दे दी गई। ये अर्धफलक मुनि ही श्वेताम्बरों के पूर्व रुप थे। श्वेताम्बारों के अनुसार शिवभूति नामक साधु ने आवेश मे आकर नग्नत्व स्वीकार किया था। अतः इन कथनों को स्वीकार करने के अपेक्षा यह कहना उचित होगा कि उस काल में ऐसे दो वर्गों का अस्तित्व था, जिनमें से एक शुद्धाचारी था जो नग्नता पर बल देता था और दूसरा वृद्ध तथा अक्षम जैन साधुओं का वर्ग था जो दिगम्बरत्व का समर्थक नहीं था। कालान्तर में यही दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदायों में प्रतिफलित हो गये होंगे।

संदर्भ

1. गुप्ते, आर.एस. : आईक्नॉग्राफी ऑफ हिन्दूज़, बुद्धिष्ट्स एण्ड जैन्स, बाम्बे, 1980।
2. गुप्त, परमेश्वरी लाल : गुप्त साम्राज्य, वाराणसी, 1963।
3. गार्डन, डी.एच. : भारतीय संस्कृति की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि (हिन्दी अनुवाद), पटना, 1970।
4. अग्रवाल, वासुदेव शरण : इण्डिया एज़ नोन टू पाणिनी, इलाहाबाद, 1953प्रकाशक का नाम।
5. आर. के.,शर्मा, मध्य प्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, 1974, भोपाल; दि कलचुरि एण्ड देयर टाइम्स, नई दिल्ली, 1980,।
6. आकियोलॉजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न सर्किल।
7. आकियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया रिपोर्ट्स।
8. आकियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया एनुवल रिपोर्ट्स।
9. अमलानंद, घोष, जैनकला एवं स्थापत्य (तीन खण्डों में), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1975,।
10. अयंगर, के. : स्टडीज़ इन साउथ इण्डियन जैनिज्म, मद्रास 1922।
11. जैन, बालचन्द्र, उत्कीर्ण, 1961, लेख, रायपुर एवं महंत घासीदास स्मारक सग्रंहालय
12. जायसवाल, के. पी. : अहिंसावाणी, 1957(अप्रैल–मई)।
13. जायसवाल, विदुला : भारतीय इतिहास के आदिचरण की रुपरेखा, (पुराप्रस्तर युग), दिल्ली, 1987।
14. क्रैमरिश, स्टेला : इण्डियन स्कल्पचर्स, कलकत्ता, 1933।
15. सुधाकर, पाण्डेय, कलचुरि ऑफ रतनपुर (अप्रकाशित शोध प्रबांध सागर वि.विद्यालय)।
16. रमानाथ, मिश्र, कलचुरि स्कल्पचर्स ऑफ डाहल एण्ड दक्षिण कोसल, दिल्ली, 1987।
17. मुनि कांतिसागर, खण्डहरों का वैभव, काशी, 1965,।
18. मारूति नंदन प्रसाद, तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, वाराणसी, 1981।
19. कनिंघम, ए. : एन्शिएण्ट जिआग्राफि आफ इण्डिया (पुर्नमुद्रित), वाराणसी, 1993।
20. कजिन्स, हेनरी, लिस्ट आफ एण्टीक्वेरियन रिमेन्स इन द सी. पी. एण्ड बरार।
21. कृष्णदेव : टेम्पल्स ऑफ नार्थ इण्डिया, 1975।
22. घोष, अमलानंद : जैन कला एवं स्थापत्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1975।
23. एम. जी., दीक्षित, एवं बैरेट डगलस, मुखलिंगम : दि टेम्पल्स ऑफ सिरपुर एण्ड राजिम, बम्बई, 1960